राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समग्र और बहु–विषयक शिक्षा का अध्ययन

*अंजु शर्मा

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के आने के साथ ही भारत की शिक्षा प्रणाली में भी 21वीं शताब्दी के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के अनुरूप बदलावों का अहम सिलसिला शुरू हो गया है। इस नीति में पठन–पाठन की पुरानी चली आ रही शिक्षक आधरित व्यवस्था की जगह विद्यार्थी–केन्द्रित नई व्यवस्था लाकर समूची प्रणाली में बदलाव लाने पर ज़ोर दिया गया है जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके और उनकी रचनात्मक क्षमता भी विकसित की जा सके। "समग्र और बहु–विषयक शिक्षा" का मतलब है कि शिक्षा इस नीति के अनुसार विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में गुणवत्ता और प्रौद्योगिकी के माध्यम से बेहतर और व्यापक बनाई जानी चाहिए। इसके तहत, नई प्रौद्योगिकियों की एक्तिव अपनाने का प्रयास किया जा रहा है जैसे कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन, मशीन लर्निंग, स्मार्ट बोड्र्स, सुझाव देने वाली कंप्यूटर परीक्षण, आदि, जो छात्रों को सिखने के तरीके को न केवल उनके अध्ययन सामग्री को, बल्कि उनके सीखने के तरीके को भी परिवर्तित करने की दिशा में मदद कर सकते हैं। इसका उद्देश्य यह बड़े महत्वपूर्ण है कि "सीखने का तरीका सीखने" कौशल को बढ़ावा दिया जाए, ताकि रटने के दुष्प्रभावों को कम किया जा सके। नीति 2020 का यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है ताकि छात्रों को सीखने की क्षमता को विकसित करने और छात्रों की सीखने की शक्ति को बढ़ाने की ओर महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जा सके।

मूलशब्दः बहु–विषयक शिक्षा, सॉफ्रट स्किल्स, शिक्षा में लचीलापन, भारतीय कला, इंटर्नशिप।

प्रस्तावना

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति की शुरुआत 1986 में की गयी थी। इसके 34 साल बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति– नेशनल एजकेशन पॉलिसी (एनईपी)–2020 घोषित की गयी जिसे मौजूदा समय में लागू किया जा रहा है। इसमें एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली की कल्पना की गयी है जिसमें हर सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के सभी विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा न्यायसंगत ढंग से मिल सके। एनईपी–2020 संयुक्त राष्ट्र के संवहनीय विकास लक्ष्य–4 के अनुरूप है। इस लक्ष्य में सबके लिये समावेशी, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने तथा आजीवन ज्ञानार्जन के अवसरों को बढ़ावा देने की बात कही गयी है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा के इस मूल सिद्धांत पर विशेष बल दिया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के साक्षर बना देने और उन्हें अंक ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहना चाहिए या फिर विद्यार्थियों में विवेचनात्मक सोच और समस्या का समाधान खोजने तक ही सीमित न रहे बल्कि शिक्षा से सामाजिक और भावनात्मक कौशल का विकास भी हो, इन्हें सॉफ्रट स्किल्स कहा जाता है और इनमें सांस्कृतिक चेतना और अनुभूति, दृढ़ निश्चय और विश्वास, टीम भावना, नेतृत्व और संचार जैसे गुणों का विकास भी शामिल है।

लचीलापन एनईपी–2020 की एक प्रमुख विशेषता है ताकि अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुरूप शिक्षार्थियों को अपने सीखने के पथ और पाठ्यक्रम चुनने के अवसर हों। इस संदर्भ में विश्वविद्यालयों के नए करिकुलम फ्रेमवर्क को देखें

तो छात्रों को न केवल अपने रूचि के विषय के अन्दर कोर्सेस चुनने का अधिकार है बल्कि सामान्य ऐच्छिक (general elective) कोर्सेस में वह किसी दूसरे स्ट्रीम से भी कोर्स पढ़ सकेगा। अर्थात विज्ञान वाला सामाजिक विज्ञान– मानविकी से भूगोल या संगीत अथवा वाणिज्य से मैनेजमेंट या मार्केटिंग के कोर्स पढ़ सकता है। अर्थात रूचि के विषय के विशेष ज्ञान के साथ–साथ बहु–विषयक ज्ञान प्राप्त करने के अवसर होंगे ताकि विद्यार्थी में समग्र दृष्टि विकसित हो सके. पूरे पाठ्यक्रम को इस तरीके से विन्यस्त किया गया है कि हर वर्ष की पढ़ाई अपने में पूर्ण है. किसी कारणवश कोई विद्यार्थी पढ़ाई छोड़ना चाहे तो विश्वविद्यालयों एक साल बाद उसे सर्टिफिकेट और दो वर्ष बाद उसे डिप्लोमा दे देगा। यही नहीं, एक बार छोड़कर जाने के बाद वापस आकर अपनी बची पढ़ाई को पूरा करने का अवसर भी विश्वविद्यालय देगा। हालाँकि एनईपी के पूर्ण कार्यान्वयन में अभी भी चुनौतियाँ हैं। आर्थिक संसाधन की अपर्याप्तता, आधारभूत संरचना की समस्याएँ, शोध एवं विमर्श की भारतीय दृष्टि का अभाव, शोध के अहम पड़ाव पीएचडी में एडमिशन प्रक्रिया की सीमाएँ, विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ समन्वय आदि कई बिंदु हैं जिन पर गंभीरता से विचार करना होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की विशेषताएं

- हर छात्र की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान कर उन्हें मान्यता और प्रोत्साहन देना।
- इस लक्ष्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देना कि सभी छात्रा तीसरी कक्षा तक बुनियादी साक्षरता और अंक ज्ञान हासिल कर लें।
- शिक्षा में लचीलापन ताकि छात्रा अपनी प्रतिभाओं और रुचियों के अनुसार जीवन का रास्ता चुन सकें।
- कला और विज्ञान, पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों तथा व्यावसायिक और औपचारिक शिक्षा के बीच कठोर विभाजन नहीं।
- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेलों के बीच बहुविषयक और समग्र शिक्षा।
- रटंत विद्या और परीक्षाओं के लिये अध्ययन के बजाय विषय की समझ विकसित करने पर जोर।
- तार्किक निर्णय लेने की क्षमता और नवोन्मेष को बढ़ावा देने के लिये रचनात्मक और आलोचनात्मक चिंतन का विकास।
- नैतिकता तथा मानवीय और सांवैधानिक मूल्यों को प्रोत्साहन।
- शिक्षण और ज्ञानार्जन में बहुभाषावाद और भाषा क्षमता को बढ़ावा।
- संचार, सहयोग, सामूहिक कार्य और लचीलापन जैसे जीवन–कौशलों का विकास।
- ज्ञानार्जन के लिये नियमित रचनात्मक मूल्यांकन पर ध्यान।
- शिक्षण और ज्ञानार्जन में प्रौद्योगिकी के विस्तृत उपयोग, भाषा के अवरोधों को दूर करने तथा दिव्यांग छात्रों के लिये पहुंच बढ़ाने पर जोर।
- विविधता और स्थानीय संदर्भों का सम्मान।
- सभी शैक्षिक पफैसलों में पूर्ण न्यायसंगतता और समावेशन।

- शुरुआती बाल्यावस्था देखभाल से लेकर स्कूली और उच्चतर शिक्षा तक सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में तालमेल।
- ज्ञानार्जन प्रक्रिया के केंद्र में शिक्षक और संकाय।
- आसान मगर सुगठित नियामक ढांचा जिससे शैक्षिक प्रणाली में ईमानदारी, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता सुनिश्चित की जा सके।
- उत्कृष्ट शिक्षा और विकास के लिये विशिष्ट शोध।
- सतत शोध के आधार पर प्रगति की लगातार समीक्षा।
- शिक्षा भारत और उसकी समृ(, विविध, प्राचीन और आधुनिक संस्कृति तथा ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं पर आधारित हो जो देश के लिये गौरव का भाव पैदा करे।
- शिक्षा एक लोक सेवा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच हर बच्चे का बुनियादी अधिकार।
- सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त निवेश पर जोर। साथ ही सही मायनों में लोकोपकारी निजी और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहन देने और सुगम बनाने का सुझाव।

समग्र और बहु–विषयक शिक्षा

समग्र और बहुविषयी शिक्षा शिक्षा को एक नए दिशा में ले जाने का प्रयास है, जिसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बीच संबंध बदल जाते हैं। इसका मतलब है कि शिक्षा परियोजनाओं और नई प्रौद्योगिकियों के माध्यम से गुणवत्ता और प्रौद्योगिकी के साथ सुधारी जा रही है, जो छात्रों के लिए बेहतर सीखने के अनुभव को बढ़ावा देती है। इसके साथ ही, इस नई दिशा में शिक्षा के तरीके भी प्राधिकृत हो रहे हैं, जिससे छात्रों को "सीखने की कौशल" को विकसित करने में मदद मिल सकती है और रटने के नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों से भारत के समग्र और बहु–विषयक सीखने की एक लंबी परंपरा है, भारत के व्यापक साहित्य में क्षेत्रों के विषयों को मिलाकर। बाणभट्ट की कादम्बरी जैसी प्राचीन भारतीय साहित्यिक कृतियों ने 64 कलाओं या कलाओं के ज्ञान के रूप में एक अच्छी शिक्षा का वर्णन किया है; गणित, विज्ञान, व्यावसायिक विषयों, व्यावसायिक विषयों और सॉफ्ट स्किल्स सहित रचनात्मक मानव प्रयासों की सभी शाखाओं को 'भारतीय कला' माना जाना चाहिए। 'कई कलाओं के ज्ञान' या आधुनिक समय में क्या कहा जाता है, की इस धारणा को अक्सर 'उदार कला' कहा जाता है (अर्थात, कलाओं की एक उदार धारणा) को भारतीय शिक्षा में वापस लाया जाना चाहिए, क्योंकि यह ठीक उसी प्रकार की शिक्षा है 21 वीं सदी के लिए आवश्यक होगा। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के साथ मानविकी और कला को एकीकृत करने वाली स्नातक शिक्षा में शैक्षिक दृष्टिकोण के आकलन ने लगातार सकारात्मक सीखने के परिणाम दिखाए हैं, जिसमें रचनात्मकता और नवाचार, महत्वपूर्ण सोच और उच्च–क्रम की सोच क्षमता, समस्या–सुलझाने की क्षमताएं शामिल हैं , टीम वर्क, संचार कौशल, खेतों में अधिक सीखने की क्षमता और क्षेत्रों में पाठ्यक्रम की महारत, सामाजिक जुड़ाव और नैतिक जागरूकता में वृद्धि, आदि के अलावा सामान्य जुड़ाव और सीखने का आनंद। समग्र और बहु–विषयक शिक्षा दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में भी सुधार और वृद्धि हुई है।

बड़े–बड़े बहु–विषयक विश्वविद्यालयों में स्नातक–स्तर, मास्टर और डॉक्टरेट शिक्षा, कठोर अनुसंधान–आधारित विशेषज्ञता प्रदान करते हुए, अकादमिक, सरकार और उद्योग सहित, बहु–विषयक कार्यों के अवसर भी प्रदान करेंगे। बड़े बहु–विषयक विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च–गुणवत्ता वाले समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की दिशा में कदम

बढ़ाएंगे। पाठ्यक्रम और उपन्यास में लचीलापन और आकर्षक पाठ्यक्रम विकल्प किसी विषय या विषयों में कठोर विशेषज्ञता के अलावा, छात्रों के लिए प्रस्ताव पर होंगे। पाठ्यक्रम बढ़ाने में संस्थापित संकाय और संस्थागत स्वायत्तता द्वारा इसे प्रोत्साहित किया जाएगा। शिक्षाशास्त्र में संचार, चर्चा, बहस, अनुसंधान और क्रॉस–डिसिप्लिनरी और अंतःविषय सोच के अवसरों पर अधिक जोर दिया जाएगा। भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, कला, नृत्य, रंगमंच, शिक्षा, गणित, सांख्यिकी, शुद्ध और अनुप्रयुक्त विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेल, अनुवाद और व्याख्या, और इस तरह के अन्य विषयों में एक बहुआयामी, उत्तेजक भारतीय के लिए आवश्यक विभाग शिक्षा और पर्यावरण सभी HEI (Higher Education Institutions) में स्थापित और मजबूत किए जाएंगे। इन विषयों के लिए सभी स्नातक उपाधि कार्यक्रमों में क्रेडिट दिया जाएगा यदि वे ऐसे विभागों से या ओडीएल मोड के माध्यम से किए जाते हैं, जब उन्हें HEI में कक्षा में पेश नहीं किया जाता है।

ऐसी समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की प्राप्ति के लिए, सभी HEI के लचीले और नवीन पाठ्यक्रम में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और समुदाय सगाई और सेवा, पर्यावरण शिक्षा, और मूल्य–आधारित शिक्षा के क्षेत्र शामिल होंगे। पर्यावरण शिक्षा में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता, जैविक विविधता का संरक्षण, जैविक संसाधनों का प्रबंधन और जैव विविधता, वन और वन्यजीव संरक्षण, और सतत विकास और रहने जैसे क्षेत्र शामिल होंगे। मूल्य आधारित शिक्षा में मानवतावादी, नैतिक, संवैधानिक और सत्य (सत्य), धार्मिक आचरण (धर्म), शांति (शांति), प्रेम (मुख्य), अहिंसा (अहिंसा, वैज्ञानिक स्वभाव, नागरिकता) के सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का विकास शामिल होगा। मूल्य, और जीवन–कौशल भी; सेवा / सेवा में सबक और सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों में भागीदारी को समग्र शिक्षा का एक अभिन्न अंग माना जाएगा। जैसे–जैसे दुनिया बढ़ती जा रही है, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जीसीईडी), समकालीन वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया, शिक्षार्थियों को वैश्विक मुद्दों को समझने और समझने और अधिक शांतिपूर्ण, सहिष्णु, समावेशी, सुरक्षित के सक्रिय प्रवर्तक बनने के लिए प्रदान किया जाएगा। अंत में, एक समग्र शिक्षा के हिस्से के रूप में, सभी HEI में छात्रों को स्थानीय उद्योग, व्यवसाय, कलाकार, शिल्प व्यक्ति आदि के साथ इंटर्नशिप के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे, साथ ही अपने स्वयं के या अन्य HEIs पर संकाय और शोधकर्ताओं के साथ अनुसंधान इंटर्नशिप प्रदान की जाएगी। अनुसंधान संस्थान, ताकि छात्र सक्रिय रूप से अपने सीखने के व्यावहारिक पक्ष के साथ जुड़ सकें और एक उप–उत्पाद के रूप में, अपनी रोजगार क्षमता में और सुधार कर सकें।

डिग्री कार्यक्रमों की संरचना और लंबाई को तदनुसार समायोजित किया जाएगा। स्नातक की डिग्री या तो 3 या 4 साल की अवधि की होगी, इस अवधि के भीतर कई निकास विकल्प के साथ, उपयुक्त प्रमाणपत्र के साथ, उदाहरण के लिए, व्यावसायिक या व्यावसायिक क्षेत्रों सहित एक अनुशासन या क्षेत्र में 1 वर्ष पूरा करने के बाद एक प्रमाण पत्र, या 2 के बाद एक डिप्लोमा अध्ययन के वर्षों, या एक 3 साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री। 4–वर्षीय बहु–विषयक स्नातक कार्यक्रम, हालांकि, पसंदीदा विकल्प होगा क्योंकि यह छात्र की पसंद के अनुसार चुने हुए प्रमुख और नाबालिगों पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा समग्र और बहु–विषयक शिक्षा की पूरी श्रृंखला का अनुभव करने का अवसर देता है। एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) स्थापित किया जाएगा जो विभिन्न मान्यता प्राप्त HEI से अर्जित अकादमिक क्रेडिट को डिजिटल रूप से संग्रहीत करेगा ताकि HEI से प्राप्त डिग्री को अर्जित क्रेडिट में ध्यान में रखते हुए सम्मानित किया जा सके। 4–वर्ष का कार्यक्रम अनुसंधान के साथ कुछ हद तक उंल हो सकता है 'यदि छात्र HEI द्वारा निर्दिष्ट अध्ययन के अपने प्रमुख क्षेत्र (ओं) में एक कठोर अनुसंधान परियोजना को पूरा करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और समग्र और बहुविषयी शिक्षा का संबंध शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और प्रौद्योगिकी के माध्यम से बेहतरीन परिवर्तनों की दिशा में है। यह नीति भारत को विश्व ज्ञान महाशक्ति बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है और छात्रों को उनकी सीखने की क्षमता को विकसित करने और उन्हें बेहतर सीखने

की शक्ति प्रदान करने का महत्वपूर्ण उद्देश्य रखती है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की दृष्टि अत्यंत व्यापक और दीर्घकालिक है। इस तथ्य और नीति के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए लक्ष्यों और प्रयोजनों को हासिल करने के लिये तौरतरीके निर्धारित किये गये हैं। शिक्षा के मौजूदा और इच्छित परिणामों के बीच अंतर को शुरुआती बाल्यावस्था से उच्चतर शिक्षण तक व्यवस्था में बड़े सुधारों तथा समुचित रणनीतियों और कार्यक्रमों के जरिये दूर किया जाना है। यह नीति अपने दृष्टिकोण और इरादे में वैश्विक के साथ ही स्थानीय भी है। यह कई मायनों में पिछली नीतियों से काफी आगे है। इसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को शैक्षिक सुधारों के एजेंडे में सबसे ऊपर रखा गया है। इसका लक्ष्य शिक्षा की बुनियाद को मजबूत बनाना, सबसे कमजोर समूहों की शैक्षिक जरूरतों को पूरा करना तथा भारत को शिक्षा के क्षेत्रा में वैश्विक तौर पर अग्रणी स्थान तक पहुंचाना है। यह नीति अपने प्रारूप और आशय दोनों के ही आधार पर वैश्विक भी है और स्थानीय भी। इसमें शिक्षा की गुणवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है और सबसे ज्यादा पिछड़े वर्गों और क्षेत्रों के बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा की सुदृढ़ नींव तैयार करके उनकी शिक्षा आवश्यकताएं पूरी करने को प्रमुखता दी गई है ताकि भारत शिक्षा के क्षेत्र में विश्व नेता के रूप में उभर कर सामने आए।

***सहायक आचार्य**
हिन्दी विभाग
शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह
राजकीय महाविद्यालय,
सवाई माधोपुर (राज.)

संदर्भ ग्रंथ

1. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1656573
2. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1742138
3. https://nep2020.hinsoli.com/2020/08/2020_96.html
4. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
5. योजना पत्रिका, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, फरवरी 2022, वर्ष– 66, अंक–02, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
6. https://social.niti.gov.in/education-index